5

बाल साहित्य का शैक्षिक अवदान

रामनिहोर तिवारी*

बच्चों के सर्वांगीण विकास में बाल साहित्य का अहम योगदान है। बाल साहित्य का अपना एक गरिमामयी इतिहास है, परंतु आज बच्चों को सीखने-सिखाने की क्रिया पाठ्यपुस्तकों तक रह गई है, जिससे बच्चों के ज्ञान का दायरा सीमित हो रहा है। यदि हम बच्चों का पूर्ण विकास करना चाहते हैं, तो हमें बाल साहित्य के माध्यम से ज्ञान देना होगा, तभी बच्चों को एक नयी दिशा मिलेगी...

बच्चों में मूल्यों का संवर्द्धन बाल साहित्य द्वारा ही संभव है। हरीशचंद्र नाटक को देख कर ही बालक मोहनदास करमचंद गांधी ने सत्य और अहिंसा को स्वाधीनता आंदोलन का आधार बनाया। बाल साहित्य बच्चों की रुचि को ध्यान में रखकर उसके सर्वांगीण विकास की चिंता करता है, और बच्चे की हित साधना को अपना अभीष्ट मानता है। बाल साहित्य का विश्लेषण करते हुए विजय शंकर मिश्र लिखते हैं- बालक की मनोदशा, उसकी आज़ादी उसकी किलकारी, उसके सपने, उसकी हलचलें सब बाल साहित्य की मूल्यवान पूँजी हैं।

बाल साहित्य के मर्मज्ञ श्री प्रांजलधर के अनुसार- पारदर्शी बालमन, पारदर्शी भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति को बाल साहित्य कहते हैं।

निष्कर्षतः बालमन को केंद्र में रख कर रचा गया साहित्य बाल साहित्य कहलाता है।

समूचे बाल साहित्य का सूत्र रूप में विहंगावलोकन करने से ज्ञात होता है कि बाल साहित्य हमें दो रूपों में उपलब्ध है—

1. मौखिक बाल साहित्य
2. लिखित बाल साहित्य

1. **मौखिक बाल साहित्य**- बाल साहित्य का अलिखित हिस्सा मौखिक बाल साहित्य कहलाता है।कुछ विद्वान दादी-नानी द्वारा सुनाई जाने वाली कहानियों को आदि मौखिक बाल साहित्य निरूपित करते हैं और कुछ विद्वानों के मतानुसार माताओं द्वारा बच्चों को सुलाने के लिए मधुर कंठ से गाई जाने वाली स्नेह-सिक्त लोरियों को

* *सेनानिवृत्त प्राचार्य*, ग्राम-पो. बल्हौड़, वाया मानपुर, जिला-उमरिया, म.प्र. 484665

प्रथम मौखिक बाल साहित्य माना गया है। मौखिक बाल साहित्य वाचिक परंपरा में लोक कथाओं, लोक गीतों, लोरियों और पहेलियों के रूप में पीढ़ियों से हमारे बीच विद्यमान है।

मौखिक बाल साहित्य के अंतर्गत ढेरों बाल लोक गीत हैं, जो बालमन को लुभाने और संवेदना संचरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन दुर्लभ हृदयस्पर्शी लोक गीतों के रचनाकारों को भले आज कोई नहीं जानता, किंतु इनका साहित्यिक योगदान अविस्मरणीय है। उत्तर प्रदेश की 'खगनिया' का नाम भुलाया नहीं जा सकता, जिन्होंने सैकड़ों ज्ञानवर्द्धक पहेलियों की आशु रचना कर मौखिक बाल साहित्य को समृद्ध किया है।

'खगनिया' जैसी अनेक निरक्षर महिलाओं द्वारा रचित दादर, सोहर, बनरा, सोहगवा, गारी जैसे अनेक उत्सव गीतों भाव गीतों तथा कर्णप्रिय लोरियों से बाल साहित्य भरा पड़ा है। पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण के चलते आज लोक गीतों का धीरे-धीरे लोप हो रहा है।

विदुषी 'मृदुला सिन्हा' बालमन को आनंद से आप्लावित करने वाली, सामाजिक चेतना की संवाहक लोरियों के भविष्य की चिन्ता करती हुई लिखती हैं- लोरियों को खो कर हम बहुत कुछ खो रहे हैं।

सच तो यह है कि यदि हमारे बीच से मौखिक बाल साहित्य लुप्त हुआ तो पीढ़ी का भावनात्मक विकास रुक जाएगा।

2. **लिखित बाल साहित्य** - पुस्तकों में लिपिबद्ध बाल साहित्य लिखित बाल साहित्य कहलाता है। यह कविता कहानी, उपन्यास, नाटक और जीवनी के रूप में उपलब्ध है। विजय शंकर मिश्र के अनुसार- बाल साहित्य की लिखित परंपरा में अमीर खुसरो से इसकी शुरूआत मानी जा सकती है। खुसरो द्वारा बच्चों के लिए लिखी गई पहेलियाँ बाल साहित्य की अमूल्य निधि हैं। इन पहेलियों से जहाँ बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन होता था, वहीं नयी-नयी जानकारियाँ सहज ही उपलब्ध हो जाती थीं, हालाँकि आज 'बुझौवल' का अस्तित्व दूरदर्शन ने विलोपित कर दिया है, किंतु इसकी महत्ता नकारी नहीं जा सकती।

बाल साहित्य के विधिवत लेखन का प्रारंभ भारतेंदु युग से होता है। इसी समय **'बाल दर्पण'** और **'बाला बोधिनी'** जैसी महत्वपूर्ण बाल पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ हुआ, जिनसे बाल साहित्य को काफी प्रोत्साहन मिला। भारतेंदु हरीशचंद्र द्वारा लिखित बाल साहित्य महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसी समय इंग्लैंड के फ्रेडरिक पिंकाट द्वारा हिंदी में बच्चों के लिए चार भागों में लिखी गई **'बालक दीपक'** भी बाल साहित्य की अमूल्य निधि है। बैताल पचीसी, सिंहासन बत्तीसी, पंचतंत्र और हितोपदेश बाल साहित्य के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखने वाली रचनाएँ हैं।

द्विवेदी युग में भी बाल साहित्य पर खूब काम हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिली

शरण गुप्त, हरिऔध, कामता प्रसाद गुरू, राम नरेश त्रिपाठी, सुखदेव चौबे, सोहन लाल द्विवेदी, रामेश्वर गुरू आदि रचनाकारों ने बाल साहित्य को दुर्लभ रचनाएँ दीं। इस समय की बाल कविताओं में राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रीय भावना का उत्साह देखते बनता है। सोहन लाल द्विवेदी तो बाल रचनाओं के सिद्धहस्त कवि थे। सुभद्रा कुमारी चौहान ने बाल साहित्य को "यह कदंब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे" और 'झाँसी की रानी' जैसी अमर कृतियों से उपकृत किया।

हिंदी के श्रेष्ठ कथाकार प्रेमचंद ने बाल साहित्य को अनेक उच्च कोटि की कहानियाँ दीं, जिनमें-'दो बैलों की कथा' 'बड़े भाई साहब' 'गुल्ली-डंडा, 'ईदगाह', 'राम लीला', आदि प्रमुख हैं। प्रेमचंद द्वारा 1936 में लिखा गया 'कुत्ते की कहानी' नामक उपन्यास हिंदी का पहला बाल उपन्यास है। अमृत लाल नागर बाल साहित्य के समर्पित रचनाकार थे, जिन्होंने रोचक और मनभावन बाल कहानियों की रचना की, बाल कविताएँ, बाल साहित्य में बढ़ोतरी की। इनके द्वारा लिखी गई बाल महाभारत अनूठी कृति है जो उनके लेखकीय निपुणता को उजागर करती है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और राष्ट्र कवि दिनकर का नाम बाल साहित्य जगत में आदरणीय है। दिनकर जी का बाल काव्य "सूरज का ब्याह" अत्यंत रोचक और मनभावन रचना है। **'बालक'** पत्रिका के संपादक रामवृक्ष बेनीपुरी ने भी बाल साहित्य पर प्रशंसनीय कार्य किया है। मन्नू भंडारी, निर्मल वर्मा, अज्ञेय, रमेशचंद्र शाह आदि रचनाकार बच्चों की कोमल भावनाओं के पारखी चितेरे हैं, जिन्होंने बालमन की गहराइयों को खँगालने में कामयाबी हासिल की है।

हमारे देश में शिक्षा का आधार मात्र पाठ्यपुस्तकें हैं। आज पाठ्यक्रम की चारदीवारी में परिसीमित ज्ञान को कक्षा में बाँटकर देखा जा रहा है, जिससे बच्चे का ज्ञान विस्तार बाधित हुआ है। सीखने-सिखाने की क्रिया पाठ्यपुस्तक तक सीमित है, जिसका उद्देश्य परीक्षा उत्तीर्ण करना मात्र है। आज भी हमारे कई शिक्षकों के मन से शाहजहाँ की बादशाहत गई नहीं है। अनुशासन के कुशासन में पल रही बाल पीढ़ी के लिए पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों का पढ़ना अघोषित अपराध है। स्कूलों को प्रदत्त बाल साहित्य अलमारियों में कैद कर दिया गया है। परिणामतः चरित्र व सोच गढ़ने में निर्णायक भूमिका अदा करने वाली साहित्यिक रचनाओं से बच्चे अछूते रह जाते हैं। शिक्षाविद् कृष्णकुमार ने अपनी पुस्तक **''बच्चे की भाषा और अध्यापक''** में लिखा है -

"स्कूल में बच्चों की ज़िंदगी को आनंददायक और उपयोगी बनाने के लिए आवश्यक सारी सामग्री दुनिया की किसी एक पाठ्यपुस्तक में नहीं मिल सकती।"

साफ ज़ाहिर है कि बच्चों को विविध विचारधाराओं से अवगत कराने और समय सामयिक जानकारियाँ प्रदान करने के लिए बाल साहित्य की महती भूमिका है।

शैक्षिक उद्देश्यों के अनुरूप स्तरीय और प्रभावी बाल साहित्य लेखन के लिए अग्रलिखित कुछ बिंदुओं पर ध्यान दिया जा सकता है -

- बाल साहित्य लेखन बाल केन्द्रित होना चाहिए।
- बाल साहित्य में प्रयुक्त भाषा सरल, सुबोध और स्तरानुकूल होनी चाहिए।

शा. पूर्व माध्यमिक शाला ताला, जिला उमरिया में बाल साहित्य का अध्ययन करते बच्चे।

- बाल साहित्य बालकल्याण की भावना से उद्‌भूत होना चाहिए।
- बाल साहित्य की रचना समय और समाज की माँग के अनुरूप होनी चाहिए।
- बाल साहित्य बालमन की रुचि को ध्यान में रख कर लिखा जाना चाहिए।
- बाल साहित्य की पुस्तकों को सचित्र और आकर्षक होना अत्यावश्यक है।
- बाल साहित्य लिखने के लिए बाल मनोविज्ञान की समझ ज़रूरी है।
- बाल साहित्य की संवेदना संवाहक के रूप में प्रभावी भूमिका होनी चाहिए।
- उपरोक्त शर्तों की कसौटी पर खरा उतरने वाला बाल साहित्य ही बालोपयोगी हो सकता है।
- पाठ्यपुस्तक की धूरी पर घूमने वाली, परीक्षा उत्तीर्ण करने तक सीमित स्कूली शिक्षा चरित्र गढ़ने में पूरी तरह सक्षम नहीं है, शैक्षिक गुणवत्ता का ग्राफ दिनों दिन घट रहा है। अस्तु बहुमुखी बौद्धिक विकास के लिए पाठ्यपुस्तक के अलावा सहायक सामग्री के रूप में बाल साहित्य की अनिवार्यता और सुलभता समीचीन है। शिक्षा को बाल साहित्य से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।

बाल साहित्य का अमूल्य योगदान

- बाल साहित्य बच्चों के शब्द भंडार में अभिवृद्धि करता है।
- बच्चों के चरित्र निर्माण में बाल साहित्य का विशिष्ट योगदान है।
- सरल-सुबोध और हृदयस्पर्शी होने के कारण बाल साहित्य बालमन पर असरदार भावनात्मक प्रभाव डालता है।
- बाल साहित्य बच्चों में पुस्तकों के प्रति आकर्षण पैदा कर पुस्तक संस्कृति का विकास करता है।
- बालसाहित्य पाठ्यपुस्तक की बासी जानकारी से ऊबे बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन करते हुए बिना किसी दबाव और तनाव के सीखने-सिखाने की क्रिया को सहज बनाता है।

बाल पुस्कालय का प्रबंधन करते बच्चे शा. पूर्व माध्यमिक शाला ताला, जिला उमरिया, मध्यप्रदेश।

- बच्चों को जिज्ञासु बनाने में बाल साहित्य की कारगर भूमिका होती है।
- बाल साहित्य बालमन में राष्ट्रीय भावना का प्रस्फुटन और संवर्द्धन कर मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है।
- बाल साहित्य बच्चों को संस्कारित कर स्वस्थ नागरिकता के गुणों से आप्लावित करता है।
- बाल साहित्य कल्पना शक्ति का विकास कर बच्चों को चिंतनशील बनाता है।
- भाषाई दक्षता विकास में लोरियों की महत्वपूर्ण भूमिका सर्वमान्य है।
- पहेलियाँ बच्चों का ज्ञानवर्द्धन करती हैं।
- लोक गीतों से बच्चे वाणी का अनुशासन सीखते हैं।
- बाल साहित्य कोमल भावनाओं की पुष्टि कर बच्चों को संवेदनशील बनाता है।
- विडंबना है कि हमारे घरों और विद्यालयों में बाल साहित्य के प्रति उदासीनता के चलते ज्ञान की अक्षय-पात्र बाल पुस्तकों का अभाव है। स्तरीय बाल साहित्य के अभाव में मानवोचित भावनाओं का पोषण नहीं हो पाता। संस्कारहीनता मूल्यों को क्षरित कर सामाजिक विद्रूपता और जघन्य आपराधिक वृत्तियों को जन्म देती है।

अस्तु बाल साहित्य के महत्त्व को स्वीकारते हुए अभिभावकों और शिक्षा संस्थाओं को नयी पीढ़ी के सम्यक बौद्धिक विकास के लिए उत्कृष्ट बाल साहित्य की प्रचुर उपलब्धता सुनिश्चित करने की तत्परता आवश्यक है। इस संदर्भ में अग्रांकित कुछ सुझाव दृष्टव्य हैं—

- प्रत्येक विद्यालय में पुस्तकालय कक्ष की व्यवस्था की जाए।
- बच्चों को वितरित की गई पुस्तकों के लेखे-जोखे की जानकारी रखी जाए।
- विद्यालय पर्यवेक्षण के दौरान बाल पुस्तकालय की पंजिका का अवलोकन अनिवार्य रूप से किया जाए, ताकि शिक्षकों पर पुस्तक वितरण का दबाव बन सके।
- बाल पुस्तकालयों के लिए क्रय की जाने वाली पुस्तकों का चयन शिक्षाविदों के परामर्श से किया जाए ताकि, बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार पुस्तकें उपलब्ध हो सकें।
- बाल पुस्तकालयों में बाल पत्रिकाओं की नियमित मासिक उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
- सुंदर रंगीन चित्रों और कार्टून से भरपूर बाल पत्रिकाएँ बच्चों को आकर्षित करती हैं।
- राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा प्रकाशित ''गुल्लक'' बाल पत्रिका का प्रकाशन बाल हित में था। पत्रिका बाल साहित्य के मापदंडों के अनुरूप थी, जिसे बच्चे बड़े चाव से पढ़ते थे। इस महत्वपूर्ण पत्रिका का प्रकाशन पुनः प्रारंभ किया जाना बच्चों के हित में है।
- शासन द्वारा अधिक से अधिक बाल पत्रिकाओं को प्रोत्साहित किया जाए, ताकि स्तरीय बाल पत्रिकाएँ बच्चों तक पहुँच सकें।
- इससे बच्चों में पुस्तक संस्कृति का विकास हो सकेगा।

- प्रत्येक जिले की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक जानकारियों को समेटते हुए मासिक बाल पत्रिका के प्रकाशन की व्यवस्था की जाए, जिसमें स्थानीय बाल साहित्यकारों और शिक्षकों की रचनाओं को वरीयता के साथ प्रकाशित किया जाए। पत्रिका में कुछ पृष्ठ बच्चों की रचनाओं के लिए सुरक्षित रखें। ऐसा करने से शिक्षकों में लेखन के प्रति रुझान और बच्चों में पत्रिका के प्रति लगाव पैदा होगा। इतना ही नहीं पत्रिका के माध्यम से बच्चे अपने परिवेश घर-गाँव और अपने पूर्वजों के गौरवशाली अतीत से परिचित हो सकेंगे।
- स्कूलों द्वारा उपलब्ध करायी गई बालोपयोगी पुस्तकें अधिकांश विद्यालयों में गुमने के डर से अलमारियों में बंद पड़ी हैं, बहुत थोड़े विद्यालय हैं जहाँ पुस्तकें बच्चों को पढ़ने के लिए दी जा रही हैं।
- इस संदर्भ में मोहम्मद नसीर अंसारी, प्रधानाध्यापक, प्रा.शा. ताला जिला-उमरिया का नाम उल्लेखनीय है, जिनकी संवेदनशील सक्रियता से विद्यालय में "ओपन लाइब्रेरी" की व्यवस्था की गई है। समूची बाल-पुस्तकें बच्चों की पहुँच में रखी गई हैं, जिनका उपयोग भयमुक्त वातावरण में बच्चे अपनी इच्छानुसार करते हैं। अनुकरणीय बात तो यह है कि पुस्तकों का वितरण और साधारण बच्चे स्वयं करते हैं। इस व्यवस्था का अनुसरण अन्य विद्यालयों में भी सुनिश्चित किया जाए।
- बाल साहित्य के प्रति संवेदनशील शिक्षकों को चिन्हित कर पुरस्कृत किया जाए, ताकि बाल पुस्तकालय की लाभकारी योजना के सफल क्रियान्वयन को प्रोत्साहन मिले।

सर्वाधिक बाल पुस्तकों का अध्ययन करने वाले छात्र को शाला के वार्षिकोत्सव में सम्मानित किया जाए। इन सुझावों को दृष्टिगत रखते हुए बाल साहित्य का चयन और इस्तेमाल किया जाए तो नि:संदेह बच्चों को स्थायी पाठक बनाने की ओर अग्रसर किया जा सकता है।

❑❑❑